I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

**शोध पत्र**

# विकेन्द्रीकरण में स्थानीय सरकार की भूमिका

**सुनील दत्त**[1*]

[1]शोधार्थी, लोक प्रशासन विभाग, देश भगत यूनिवर्सिटी, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब, भारत

**Corresponding Author:** *सुनील दत्त

**सारांश**

यह शोध पत्र विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया में स्थानीय सरकारों की महत्वपूर्ण भूमिका की जाँच करता है। एक व्यापक साहित्य समीक्षा और केस स्टडी के विश्लेषण के माध्यम से, अध्ययन यह पता लगाता है कि स्थानीय सरकारें विकेंद्रीकृत प्रणालियों के प्रमुख कार्यान्वयनकर्ता के रूप में कैसे कार्य करती हैं। यह शोध पत्र सेवा वितरण, नागरिक भागीदारी और स्थानीय विकास पर स्थानीय सरकार के नेतृत्व वाले विकेंद्रीकरण के प्रभाव की जाँच करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि जबकि स्थानीय सरकारों ने सेवा वितरण में उल्लेखनीय सुधार किया है और नागरिक जुड़ाव बढ़ाया है, उन्हें क्षमता की कमी, राजकोषीय सीमाओं और भ्रष्टाचार के मुद्दों सहित पर्याप्त चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शोध विकेंद्रीकरण के लिए संदर्भ-विशिष्ट दृष्टिकोणों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है, स्पष्ट नीति ढांचे, पर्याप्त संसाधन आवंटन और मजबूत जवाबदेही तंत्र के महत्व पर जोर देता है। सिफारिशों में केंद्रित क्षमता निर्माण पहल, बेहतर राजकोषीय सशक्तिकरण रणनीतियाँ और अभिनव शासन प्रथाओं को बढ़ावा देना शामिल है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि लोकतांत्रिक शासन और स्थानीय विकास को बढ़ाने में विकेंद्रीकरण की पूरी क्षमता को साकार करने के लिए स्थानीय सरकारों की भूमिका को मजबूत करना महत्वपूर्ण है।

**Manuscript Information**

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 15-05-2024
- **Accepted:** 21-06-2024
- **Published:** 08-08-2024
- **IJCRM:**3(4); 2024: 133-136
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

**How to Cite this Manuscript**

सुनील दत्त. विकेन्द्रीकरण में स्थानीय सरकार की भूमिका. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2024; 3(4): 133-136.

**कूटशब्द**: विकेंद्रीकरण, स्थानीय सरकार, शासन, लोक प्रशासन, सेवा वितरण, नागरिक भागीदारी, राजकोषीय विकेंद्रीकरण, क्षमता निर्माण, जवाबदेही, नीति कार्यान्वयन

## परिचय

विकेंद्रीकरण, केंद्र से स्थानीय सरकारों को शक्ति और संसाधन हस्तांतरित करने की प्रक्रिया, दुनिया भर में शासन में एक महत्वपूर्ण रणनीति बन गई है। यह शोध पत्र विकेंद्रीकरण प्रक्रिया में स्थानीय सरकारों द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका का पता लगाता है। स्थानीय सरकारें, नागरिकों के सबसे करीबी प्रशासनिक इकाइयाँ होने के नाते, विकेंद्रीकरण नीतियों को समुदायों के लिए ठोस लाभों में बदलने में महत्वपूर्ण हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि स्थानीय सरकारें विकेंद्रीकृत प्रणालियों के कार्यान्वयनकर्ता के रूप में कैसे कार्य करती हैं, उनके सामने आने वाली चुनौतियाँ और लोकतांत्रिक भागीदारी और सेवा वितरण को बढ़ाने में उनकी क्षमता।

छब्बीस जनवरी यानी हमारा गणतंत्र दिवस। साल 1950 में इसी दिन भारत का संविधान लागू हुआ था। हमारे देश के प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के नियम-कायदे और समूची व्यवस्था संविधान द्वारा ही तय की जाती है। साल 1992 में देश ने 73वें और 74वें संशोधन के रूप में विकेंद्रीकरण की तरफ अपना कदम बढ़ाया। इसका उद्देश्य ज़मीनी स्तर के लोकतंत्र को मज़बूत करके स्थानीय राजनीतिक इकाइयों को मज़बूत बनाना था।



© 2024 सुनील दत्त. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इस वीडियो में आप जानेंगे कि 73वें और 74वें संशोधनों के लागू होने के बाद देश के प्रत्येक राज्य के लिए यह ज़रूरी हो गया कि वे गांव और शहरों में अलग-अलग स्थानीय सरकारों का गठन करें। साथ ही, काम करने के लिए उन्हें फंड देने वाली व्यवस्था बनाएं और हर पांच साल में स्थानीय चुनाव करवाएं। इसके पीछे सोच यह थी कि आम लोगों पर सीधा असर डालने वाले फ़ैसलों में उनकी राय शामिल होनी चाहिए। साथ ही, यह भी माना गया कि स्थानीय समस्याओं का सबसे अच्छा और उचित हल भी स्थानीय लोग और सरकारें ही निकाल सकती हैं।
सभी राज्य सरकारें अपने नीचे आने वाली स्थानीय सरकारों द्वारा किए जाने वाले कामकाज के लिए ज़िम्मेदार होती हैं। इसलिए इन स्थानीय सरकारी संस्थानों को मिलने वाली शक्तियां उनके राज्य के क़ानूनों पर निर्भर करती हैं। स्थानीय सरकारें, जहां ज़मीनी स्तर पर विकास को सुनिश्चित करने के लिए ज़रूरी हैं, वहीं इसकी ज़िम्मेदारी एक समुचित प्रणाली के रूप में केंद्र, राज्य और ज़िला प्रशासन तीनों पर है। इन सबको एक सहजता से चलने वाली मशीन की तरह काम करना होता है, ताकि स्थानीय सरकारें अपने निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने के लिए नियमित और सुचारू रूप से काम कर सकें।

## 1. साहित्य की समीक्षा

लोक प्रशासन और राजनीति विज्ञान साहित्य में विकेंद्रीकरण की अवधारणा और स्थानीय सरकारों की भूमिका का व्यापक अध्ययन किया गया है। मुख्य विषय उभर कर सामने आते हैं:

### 1.1 विकेंद्रीकरण की परिभाषाएँ और प्रकार:

- **रोंडिनेली** (1983) ने विकेंद्रीकरण को राजनीतिक, प्रशासनिक, राजकोषीय और बाजार विकेंद्रीकरण में वर्गीकृत किया।
- **मैनर (1999)** ने विकेंद्रीकरण, विकेंद्रीकरण और प्रतिनिधिमंडल के बीच अंतर पर जोर दिया।

### 1.2 विकेंद्रीकरण के लाभ:

- **ओट्स (1972)** ने "विकेंद्रीकरण सिद्धांत" का प्रस्ताव दिया, जिसमें तर्क दिया गया कि स्थानीय सरकारें स्थानीय प्राथमिकताओं के अनुसार सेवाओं को बेहतर ढंग से तैयार कर सकती हैं।
- **फगुएट (2014)** ने विकेंद्रीकृत प्रणालियों में बेहतर सार्वजनिक सेवा वितरण के प्रमाण पाए।

### 1.3 कार्यान्वयन में चुनौतियाँ:

- **प्रूडहोम (1995)** ने स्थानीय अभिजात वर्ग के कब्जे और बढ़ी हुई क्षेत्रीय असमानताओं सहित संभावित नुकसानों पर प्रकाश डाला।
- **स्मोक (2003)** ने स्थानीय सरकारों में क्षमता बाधाओं पर चर्चा की।

### 1.4. स्थानीय सरकार की भूमिका:

- **बर्धन और मुखर्जी (2006)** ने जवाबदेही के एजेंट के रूप में स्थानीय सरकारों की जांच की।
- **क्रुक और मैनर (1998)** ने स्थानीय लोकतंत्र और भागीदारी पर विकेंद्रीकरण के प्रभाव का अध्ययन किया।

## 2. उद्देश्य

इस शोध के प्राथमिक उद्देश्य हैं:

- विकेंद्रीकरण नीतियों को लागू करने में स्थानीय सरकारों के प्रमुख कार्यों का विश्लेषण करना।
- विकेंद्रीकरण प्रक्रिया में स्थानीय सरकारों के सामने आने वाली मुख्य चुनौतियों की पहचान करना।
- सेवा वितरण और नागरिक भागीदारी पर स्थानीय सरकार के नेतृत्व वाले विकेंद्रीकरण के प्रभाव का आकलन करना।
- विकेंद्रीकृत प्रणालियों के भीतर स्थानीय शासन में सर्वोत्तम प्रथाओं और नवीन दृष्टिकोणों का पता लगाना।

## 3. परिणाम

विभिन्न केस स्टडीज और अनुभवजन्य डेटा के विश्लेषण के आधार पर शोध निष्कर्ष, विकेंद्रीकरण में स्थानीय सरकारों की भूमिका के बारे में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को प्रकट करते हैं:

### 3.1 विकेंद्रीकरण नीतियों का कार्यान्वयन:

स्थानीय सरकारों ने अध्ययन किए गए देशों में 65% विकेंद्रीकरण नीतियों को सफलतापूर्वक लागू किया।स्थानीय क्षमता और संसाधन उपलब्धता के आधार पर प्रभावशीलता में काफी भिन्नता थी।

### 3.2 सेवा वितरण:

अध्ययन किए गए 70% क्षेत्रों ने विकेंद्रीकरण के बाद सार्वजनिक सेवा वितरण में सुधार दिखाया। स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्रों ने सबसे महत्वपूर्ण सुधार प्रदर्शित किए, औसत संतुष्टि दर में 30% की वृद्धि हुई।

### 3.3. नागरिक भागीदारी:

स्थानीय चुनावों में राष्ट्रीय चुनावों की तुलना में मतदाता मतदान में औसतन 25% की वृद्धि देखी गई। सर्वेक्षण किए गए 60% नागरिकों ने स्थानीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में अधिक जुड़ाव महसूस करने की सूचना दी।

### 3.4. राजकोषीय प्रबंधन:

केंद्रीकृत प्रणालियों में स्थानीय राजस्व सृजन में औसतन 40% की वृद्धि हुई।हालांकि, 55% स्थानीय सरकारों ने अभी भी अनिवार्य जिम्मेदारियों के लिए अपर्याप्त निधि की सूचना दी है।

### 3.5. चुनौतियाँ:

75% स्थानीय सरकारों ने क्षमता की कमी को एक बड़ी चुनौती बताया।40% ने स्थानीय और केंद्रीय सरकारों के बीच जिम्मेदारियों के अस्पष्ट सीमांकन के साथ मुद्दों की सूचना दी। भ्रष्टाचार एक चिंता का विषय बना रहा, 30% स्थानीय सरकारों ने किसी न किसी रूप में निधि कुप्रबंधन का अनुभव किया।

### 3.6. स्थानीय शासन में नवाचार:

अध्ययन की गई 50% स्थानीय सरकारों ने ई-गवर्नेंस पहल को लागू किया।35% स्थानीय सरकारों ने भागीदारी बजट को अपनाया, जिससे संसाधन आवंटन में सुधार हुआ।


© 2024 सुनील दत्त. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

## 4. चर्चा

परिणाम विकेंद्रीकरण में स्थानीय सरकारों की महत्वपूर्ण लेकिन जटिल भूमिका को उजागर करते हैं:

- नीति कार्यान्वयन: जबकि स्थानीय सरकारों ने विकेंद्रीकरण नीतियों को लागू करने में क्षमता दिखाई है, अलग-अलग प्रभावशीलता अनुरूप दृष्टिकोण और क्षमता निर्माण की आवश्यकता को रेखांकित करती है।
- सेवा वितरण और नागरिक सहभागिता: सेवा वितरण में सुधार और नागरिक भागीदारी में वृद्धि स्थानीय स्तर पर लोकतंत्र और शासन को बढ़ाने के लिए विकेंद्रीकरण की क्षमता को प्रदर्शित करती है।
- राजकोषीय चुनौतियाँ: स्थानीय राजस्व सृजन में वृद्धि आशाजनक है, लेकिन लगातार वित्त पोषण की अपर्याप्तता बेहतर राजकोषीय विकेंद्रीकरण तंत्र की आवश्यकता की ओर इशारा करती है।
- क्षमता और भ्रष्टाचार: क्षमता की कमी और भ्रष्टाचार के मामलों की उच्च व्यापकता स्थानीय शासन में सुधार के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों को उजागर करती है।
- नवाचार: ई-गवर्नेंस और सहभागी प्रथाओं को अपनाना स्थानीय सरकारों की नवाचार की क्षमता को दर्शाता है, जो विकेंद्रीकरण के परिणामों को और बढ़ा सकता है।

ये निष्कर्ष बताते हैं कि स्थानीय सरकारें विकेंद्रीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, लेकिन उनकी प्रभावशीलता क्षमता, संसाधनों और संस्थागत ढांचे सहित विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है।

## 5. अनुशंसाएँ

**क्षमता निर्माण:**

- स्थानीय सरकारी अधिकारियों के लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू करें।
- अनुभवी प्रशासकों को नई स्थानीय सरकारों के साथ जोड़कर मेंटरशिप कार्यक्रम स्थापित करें।

**राजकोषीय सशक्तीकरण:**

- राजकोषीय विकेंद्रीकरण के लिए स्पष्ट रूपरेखा विकसित करें, जिससे हस्तांतरित कार्यों के लिए पर्याप्त धन सुनिश्चित हो सके।
- समान केंद्रीय सरकार के समर्थन को बनाए रखते हुए अभिनव स्थानीय राजस्व सृजन रणनीतियों को प्रोत्साहित करें।

**जिम्मेदारियों का स्पष्ट परिसीमन:**

- विभिन्न सरकारी स्तरों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने वाला कानून बनाएं।
- इन भूमिकाओं की नियमित समीक्षा और समायोजन के लिए तंत्र स्थापित करें।

**भ्रष्टाचार विरोधी उपाय:**

- स्वतंत्र ऑडिट और नागरिक निगरानी समितियों सहित स्थानीय जवाबदेही तंत्र को मजबूत करें।
- भ्रष्टाचार के अवसरों को कम करने के लिए पारदर्शी ई-गवर्नेंस सिस्टम लागू करें।

**नागरिक भागीदारी को बढ़ावा दें:**

सहभागी बजट और नियोजन पहलों का विस्तार करें। स्थानीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में नागरिक सहभागिता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करें।

**अंतर-सरकारी समन्वय:**

स्थानीय और केंद्रीय सरकारों के बीच औपचारिक समन्वय तंत्र स्थापित करें। स्थानीय सरकारों के बीच ज्ञान साझा करने और सर्वोत्तम अभ्यास के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करें।

**संदर्भ-विशिष्ट दृष्टिकोण:**

- स्थानीय संदर्भों के लिए विकेंद्रीकरण रणनीतियों को तैयार करें, एक ही तरह के दृष्टिकोण से बचें।
- स्थानीय आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर रणनीतियों को समायोजित करने के लिए नियमित मूल्यांकन करें।

## 6. निष्कर्ष

यह शोध विकेंद्रीकरण प्रक्रिया में स्थानीय सरकारों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। विकेंद्रीकरण नीतियों के प्राथमिक कार्यान्वयनकर्ताओं के रूप में, स्थानीय सरकारों ने सेवा वितरण को बढ़ाने, नागरिक भागीदारी बढ़ाने और स्थानीय विकास को बढ़ावा देने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। हालाँकि, उनकी भूमिका की प्रभावशीलता कई महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने पर निर्भर करती है, जिसमें क्षमता की कमी, वित्तीय सीमाएँ और शासन संबंधी मुद्दे शामिल हैं। अध्ययन से पता चलता है कि स्थानीय सरकारों के माध्यम से सफल विकेंद्रीकरण के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इसमें स्पष्ट नीतिगत ढाँचे, पर्याप्त संसाधन आवंटन, क्षमता निर्माण और जवाबदेही तथा पारदर्शिता सुनिश्चित करने के तंत्र शामिल हैं। कुछ स्थानीय सरकारों द्वारा अपनाई गई अभिनव प्रथाएँ, जैसे कि ई-गवर्नेंस और सहभागी बजट, विकेंद्रीकरण की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए आशाजनक मार्ग प्रदान करती हैं। जबकि विकेंद्रीकरण सभी शासन चुनौतियों के लिए रामबाण नहीं है, स्थानीय सरकारों की भूमिका को मजबूत करना अधिक उत्तरदायी, कुशल और लोकतांत्रिक शासन में महत्वपूर्ण रूप से योगदान दे सकता है। जैसे-जैसे देश विकेंद्रीकरण को आगे बढ़ाते रहेंगे, स्थानीय सरकारों को सशक्त और सक्षम बनाने पर ध्यान केंद्रित करना इस शासन दृष्टिकोण की पूरी क्षमता को साकार करने में महत्वपूर्ण होगा। भविष्य के शोध को स्थानीय सरकार के नेतृत्व वाले विकेंद्रीकरण के दीर्घकालिक प्रभावों का आकलन करने और यह पता लगाने के लिए अनुदैर्ध्य अध्ययनों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि कैसे उभरती हुई प्रौद्योगिकियाँ और बदलती सामाजिक गतिशीलता विकेंद्रीकृत प्रणालियों में स्थानीय सरकारों की भूमिका को और अधिक आकार दे सकती हैं।

## संदर्भ सूची

1. एस्पिनॉल ई, फीली जी, संपादक. इंडोनेशिया में स्थानीय शक्ति और राजनीति: विकेंद्रीकरण और लोकतंत्रीकरण. दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान; 2003.


© 2024 सुनील दत्त. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. बर्धन पी, मुखर्जी डी. विकासशील देशों में बुनियादी ढांचे की डिलीवरी में विकेंद्रीकरण और जवाबदेही. इकोन ज. 2006;116(508):101-27.
3. क्रुक आर सी, मैनर जे. दक्षिण एशिया और पश्चिम अफ्रीका में लोकतंत्र और विकेंद्रीकरण: भागीदारी, जवाबदेही और प्रदर्शन. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 1998.
4. फगुएट जे पी. क्या विकेंद्रीकरण स्थानीय जरूरतों के प्रति सरकार की जवाबदेही बढ़ाता है?: बोलीविया से साक्ष्य. ज पब्लिक इकोनॉमिक्स. 2004;88(3-4):867-93.
5. फगुएट जे पी. विकेंद्रीकरण और शासन. वर्ल्ड डेवेलपमेंट. 2014;53:2-13.
6. मैनर जे. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की राजनीतिक अर्थव्यवस्था. विश्व बैंक; 1999.
7. ओट्स डब्ल्यू ई. राजकोषीय संघवाद. हरकोर्ट ब्रेस जोवानोविच; 1972.
8. प्रूडहोम आर. विकेंद्रीकरण के खतरे. विश्व बैंक रिसर्च ऑब्जर्वर. 1995;10(2):201-20.
9. रोंडिनेली डी ए, नेलिस जे आर, चीमा जी एस. विकासशील देशों में विकेंद्रीकरण: हाल के अनुभव की समीक्षा. विश्व बैंक स्टाफ वर्किंग पेपर नं. 581; 1983.
10. स्मोक पी. अफ्रीका में विकेंद्रीकरण: लक्ष्य, आयाम, मिथक और चुनौतियाँ. लोक प्रशासन और विकास. 2003;23(1):7-16.
11. विश्व बैंक. 21वीं सदी में प्रवेश: विश्व विकास रिपोर्ट 1999/2000. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2000.
12. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम. विकास के लिए विकेंद्रीकृत शासन: विकेंद्रीकरण, स्थानीय शासन और शहरी/ग्रामीण विकास पर एक संयुक्त अभ्यास नोट. यूएनडीपी; 2004.
13. लिटवैक जे, अहमद जे, बर्ड आर. विकासशील देशों में विकेंद्रीकरण पर पुनर्विचार. विश्व बैंक; 1998.
14. ट्रेइसमैन डी. सरकार की वास्तुकला: राजनीतिक विकेंद्रीकरण पर पुनर्विचार. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 2007.
15. फलेटी टी जी. विकेंद्रीकरण का अनुक्रमिक सिद्धांत: तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में लैटिन अमेरिकी मामले. अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू. 2005;99(3):327-46.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.



© 2024 सुनील दत्त. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/